ज्ञान शांति मैत्री

International Forum for Language & Literature

हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र (TLCHS)

(पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण अभियान (PMMMNMTT) के अंतर्गत संचालित)

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

द्वारा प्रायोजित व

हिंदी विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी तथा अंतरराष्ट्रीय भाषा एवं साहित्य मंच, भारत

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

हिंदी की वर्तमान स्थिति, चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ पूर्वोत्तर भारत के विशेष संदर्भ में

दिनांक : 19-20 फरवरी, 2020

प्रतिवेदन/रिपोर्ट

हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा प्रायोजित व हिंदी विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी तथा अंतरराष्ट्रीय भाषा एवं साहित्य मंच, भारत के संयुक्त तत्वाधान में **'हिंदी की वर्तमान स्थिति, चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ पूर्वोत्तर भारत के विशेष संदर्भ में'** विषय पर दिनांक 19-20 फरवरी, 2020 को आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता गौहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी के मा. कुलपति के प्रतिनिधि के रूप में डॉ. दिलीप बोरा ने की। बीज वक्तव्य प्रो. कृपाशंकर चौबे, अधिष्ठाता, मानविकी एवं समाजिक विज्ञान विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की सह-अध्यक्षता प्रो. कृष्ण कुमार सिंह, निदेशक, हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा तथा डॉ. किरण हजारिका, अध्यक्ष, अंतरराष्ट्रीय भाषा एवं साहित्य मंच, भारत ने किया। विशिष्ट अतिथि के रुप में कोलंबो से पधारे प्रो. डी. पी. सिंह तथा अमेरिका से पधारे प्रो. प्राण जग्गी मंचस्थ रहे। इनके अतिरिक्त कार्यक्रम की स्थानीय संयोजक डॉ. रीतामणि वैश्य मंच पर उपस्थित रहीं। सत्र का संचालन गौहाटी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के डॉ. अच्युत शर्मा ने किया।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. दिलीप बोरा ने कहा कि उत्तर पूर्व में हिंदी क्षेत्रीय भाषाओं के साथ समन्वित रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन कर रही है। उन्होंने कहा कि जिस भाषा में भूल करने की छूट नहीं दी जाएगी वह भाषा अधिक दिन टिक नहीं सकती है। हिंदी की उन्नति के लिए सम्पूर्ण देश के नागरिकों को आगे आना होगा और सरकारों को चाहिए कि वह क्षेत्रीय भाषाओं के विकास के साथ ही हिंदी को राष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित करें।

अपने बीज वक्तव्य में प्रो. कृपाशंकर चौबे ने बताया कि पूर्वोत्तर भारत में पत्र-पत्रिकाएं व विविध संस्थानों ने हिंदी के विकास के लिए अपनी महती भूमिका का निर्वहन किया है किंतु अलगाववादी भावनाओं ने बाधा भी पहुँचायी है। उन्होंने लिपि विहीन भाषाओं के लिपिबद्ध करने की वकालत करते हुए बोड़ो भाषा के लिपियों के विकास के लिए दीनेश्वर ब्रह्म के योगदान की सराहना की।

डॉ. किरण हजारिका ने अपने उद्बोधन में यह स्पष्ट किया कि हिंदी के प्रति सम्पूर्ण भारतवासी को अपनी मानसिकता बदलनी होगी। उन्होंने बताया कि भारत का सत्य हिंदी है और इस सत्य को स्वीकारना समस्त भारतीयों के लिए श्रेयस्कर है। उन्होंने हिंदी के विकास में हिंदीत्तर भाषी लोगों के योगदान को रेखांकित करते हुए पूर्वोत्तर भारत के हिंदी विद्वानों, शोधार्थियों व विद्यार्थियों के प्रति आदर व्यक्त किया। गौहाटी विश्वविद्यालय के शैक्षणिक कुलसचिव डॉ. गुरू प्रसाद खाटनियार ने अपने वक्तव्य में हिंदी के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए हिंदी के साथ ही क्षेत्रीय भाषाओं के परिवर्धन व विकास करने की ओर ईशारा किया।

अपने सहअध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने कहा कि महात्मा गांधी अंग्रेजी के बड़े ज्ञाता होने के बावजूद हिंदी को सर्वाधिक महत्व दिया। उन्होंने सुभाष चंद्र बोस, बंकिम चंद्र चटर्जी, दयानंद सरस्वती के हिंदी के प्रति महत्वपूर्ण योगदानों का उल्लेख करते हुए बताया कि हम सभी को इन महापुरूषों के कदमों का अनुगमन करना चाहिए तथा हिंदी को अधिकाधिक समृद्ध भाषा बनाने हेतु निरंतर प्रयत्न करना चाहिए क्योंकि हिंदी के द्वारा राष्ट्रीय एकता को मजबूती प्रदान करने में सहायता मिलेगी। उन्होंने पूर्वोत्तर भारत के प्रत्येक हिंदी प्रेमी एवं हिंदी सेवी के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यतक्त करते हुए अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य को हिंदी में अनुदित करने का आग्रह भी किया जिससे क्षेत्रीय भाषाओं में अंतर्निहित राशि भारतीय जनमानस क समक्ष प्रमाणिक रूप में उद्घाटित हो सके।

सत्र के अंत में प्रो. दिलीप कुमार मेधी ने सभी आगंतुकों, प्रतिभागियों, विषय-विशेषज्ञों, विद्वानों, अतिथियों, मीडिया कर्मियों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के प्रति आभार ज्ञापित करते हुए अपनी कृतज्ञता व्यक्त किया।

उद्घाटन सत्र के पश्चात दो दिनों में कुल 21 तकनीकी/शैक्षणिक सत्रो में वक्ताओं तथा प्रतिभागियों द्वारा कुल 147 शोधपत्र/आलेख प्रस्तुत किये गये ।

दिनांक 20.02.2020 को अपराह्न 3.00 बजे से संगोष्ठी का समापन सत्र आयोजित हुआ। समापन सत्र की अध्यक्षता डॉ. किरण हजारिका, अध्यक्ष, अंतरराष्ट्रीय भाषा एवं साहित्य मंच, भारत ने की। सहअध्यक्षता संगोष्ठी संयोजक प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने की। इस अवसर पर विशेष सान्निध्य प्रो. प्राण जग्गी एवं प्रो. दुर्गा प्रसाद सिंह का रहा। सर्वप्रथम मंचस्थ अधिकारियों का स्वागत किया गया। इसके पश्चात स्थानीय संयोजक डॉ. रीतामणि वैश्य ने संगोष्ठी की विस्तृत आख्या प्रस्तुत करते हुए कहा कि दो दिनों में उद्घाटन एवं समापन सत्रो के अतिरिक्त कुल 21 तकनीकी/शैक्षणिक सत्रों में वक्ताओं एवं प्रतिभागियों द्वारा कुल 147 शोध आलेख पत्र प्रस्तुत किये गये। इसके उपरांत प्रतिभागियों तथा विद्वानों से स्वेच्छा से

संगोष्ठी के संबंध में प्रतिक्रियाएँ व्यक्त करने का अनुरोध किया गया। जिसको स्वीकार करते हुए कुछ प्रतिभागियों तथा विद्वानों ने संगोष्ठी से संबंधित अपनी सकारात्मक प्रतिक्रियाओं को व्यक्त किया।

अपने संयोजकीय उद्बोधन में प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने बताया कि गौहाटी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के स्वर्ण जयंती वर्ष में आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में 100 से अधिक शोध पत्रों की प्रस्तुति अपने आप में अनूठा है। उन्होंने कहा कि अंग्रेजी के वर्चस्व से भारतीय भाषाओं पर उमड़ते हुए खतरों को निराकृत करने हेतु हम सभी भारतवासी को प्राणपन से लगना होगा। उन्होंने सतर्क किया कि भाषा बचेगी तभी संस्कृति बचेगी और संस्कृति के बचाव से मनुष्य का बचाव व विकास उचित रीति-नीति से हो सकेगा। उन्होंने इस संगोष्ठी की सफलता का श्रेय़ महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के माननीय कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल को प्रदान करते हुए उनके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त की।

अंतरराष्ट्रीय भाषा एवं साहित्य मंच के अध्यक्ष तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सदस्य डॉ. किरन हजारिका ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में सर्वप्रथम अत्यंत प्रासंगिक विषय पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का सफल आयोजन एवं क्रियान्वयन के लिए सभी संबंधित के प्रति साधुवाद व्यक्त किया। उन्होंने बताया कि हिंदी ऐसी भाषा है जिसके स्वरूप में ही राष्ट्रीय भावना समाहित है। हिंदी राष्ट्रीय एकता की कुंजी है। इसीलिए हिंदी के आम लोगों ने अपनाया है और अपने दिल व दिमाग में संजोकर रखा है। उन्होंने कहा कि हिंदी का सम्मान विदेशों में भी स्थापित है और यह निरंतर वृद्धि की ओर अग्रसर है जो हिंदी की अंतरराष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति है। उन्होंने हिंदी के संवर्धन एवं विकास के लिए सरकार द्वारा किये जा रहे उल्लेखनीय कार्यों को रेखांकित करते हुए उसकी भूरि भूरि प्रशंसा की।

अंत में समस्त प्रतिभागियों/वक्ताओं को प्रमाण-पत्र वितरण के उपरांत मंच का संचालन कर रहे डॉ. अच्युत शर्मा द्वारा सभी अगतों के प्रति आभार ज्ञापित किया गया तथा राष्ट्रगान के साथ संगोष्टी सम्पन्न हुई।